जनवरी-मार्च, 2022

बातूनी

अंक-126

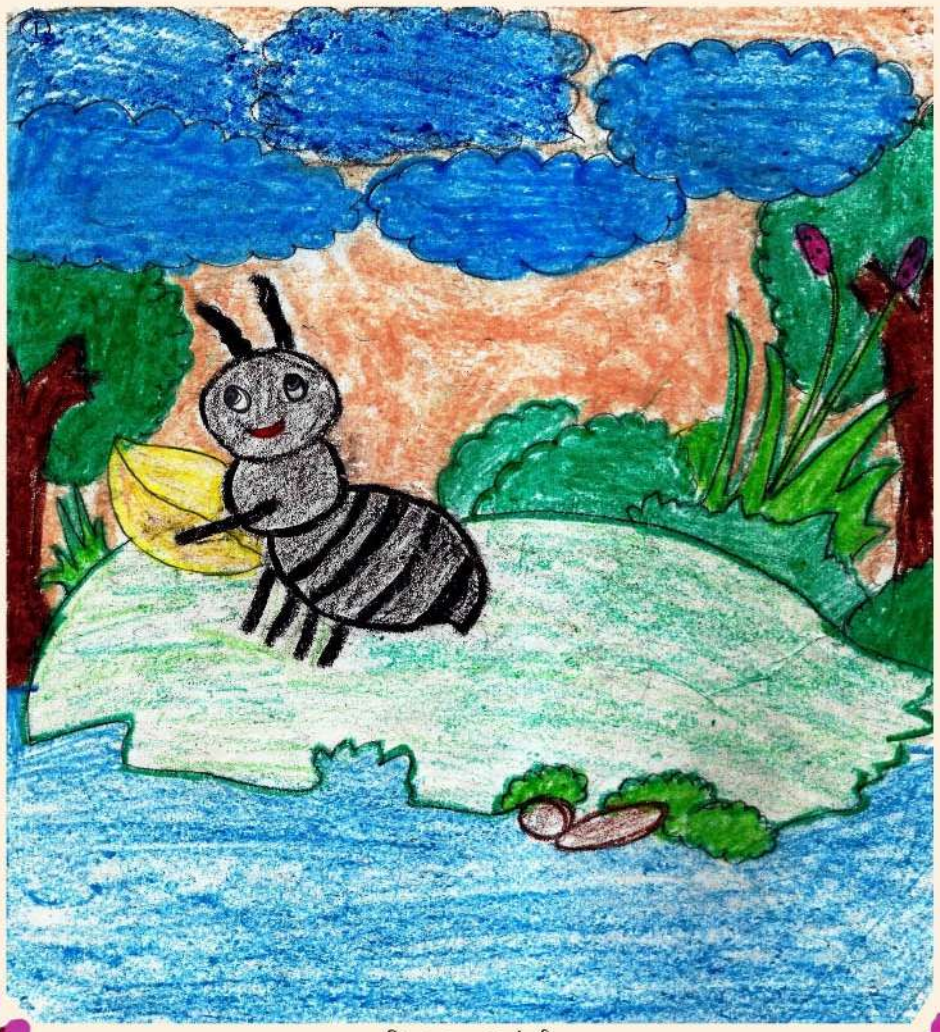

फिजा, समूह-चांदनी

जनवरी-मार्च, 2022

बातूनी

अंक-126

इस अंक में...

- बातूनी की बात 3
- दो भाई 4
- होली 5
- होली आई 6
- ओम फो... धर्राटी हवा काट रही 6
- मेरी बात 7
- होली आई, मस्ती लाई 7
- सफेद सांप और सपेरा 8
- स्कूल है मेरी प्यारी–प्यारी 9
- बादल 9
- जादुई पन्नी 10
- खेल 11
- गिल्ली 12
- सोहन व बकरी का बच्चा 13
- मेरा स्कूल 14
- औरत / नारी 15
- मददगार लड़का 16
- सावन आया, सावन आया 17
- चंदू की कहानी 17
- पहेलियां 18–19
- बासेड़ा 20
- चुटकुला 20
- बसंत पंचमी 21
- जब पापा फिसल गए 22
- हमारे बकरे को शेर खा गया 23

दिगन्तर विद्यालय द्वारा
प्रकाशित

संपादक मंडल
हेमन्त शर्मा
नौरतमल पारीक
गुणमाला जैन
विवेक सिंह राठौड़

परामर्श
रीना दास

कम्प्यूटर सैटिंग
ख्यालीराम स्वामी

कम्पोजिंग
गणपत सैन

सम्पर्क (मुख्य कार्यालय)

दिगन्तर
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड़,
जगतपुरा, जयपुर-302017
Email : vidyalay@digantar.org
www.digantar.org

मुख्य आवरण : फ़िजा, समूह–चाँदनी
पिछला आवरण चित्र : फोटो कोलाज
बॉर्डर बनाया : सोहिल, समूह–रोशनी

बातूनी की बात

प्यारे बच्चो!

नमस्ते, कैसे हैं आप सभी ? उम्मीद है सभी सकुशल होंगे। मार्च का महीना जा चुका है, अब आगे बहुत गर्मी पड़ने वाली है। गर्मी में लू का तो खतरा रहता ही है लेकिन खान–पान में भी सावधानी की बहुत जरुरत है। आप सभी बच्चे ऐसे में खूब छाछ, ठण्डा पानी पीते रहें, मौसमी फल खाएं, ताजा भोजन करें, स्वस्थ रहें और खुश रहें। क्योंकि अब आप में से बहुत से बच्चों की बोर्ड की परीक्षा शुरू हो चुकी है तो बहुत से बच्चों की परीक्षा आने वाली है। ऐसे में गर्मी के चलते अपने को बीमार मत होने देना। अपनी सेहत का अच्छे से ध्यान रखना।

मैं जानती हूँ कि आप लोगों ने मेरा खूब इंतजार किया है लेकिन मेरा यकीन मानिये, मैं भी आप सभी से बात करने को बेसब्र थी। इस बार मैं आप लोगों के लिए मजेदार कहानियों के साथ–साथ कुछ त्यौहारों से संबंधित कविताएं भी लेकर आई हूँ। और हां, कुछ बच्चों ने आपके लिए रोचक पहेलियां भी भेजी हैं। अब देखना यह है कि आप इन पहेलियों के उत्तर खोज पाते हैं या नहीं। कुछ बच्चों ने अपने साथ घटित किस्सों और घटनाओं को भी लिखकर भेजा है। मुझे तो ये बहुत पसंद आए। उम्मीद है कि आपको भी पसंद आएंगे। यह अंक पढ़कर आप अपनी प्रतिक्रिया मुझे जरूर भेजना।

आपकी प्रतिक्रिया के इंतजार में,

आपकी अपनी बातूनी।

दो भाई

चित्र : किशोर, समूह–रोशनी

एक गांव था। उस गांव में दो भाई रहते थे। उन दोनों का नाम रमेश व सुरेश था। वे दोनों बहुत प्यार से रहते थे। उनके पास एक खेत था। इस बार उन्होंने खेत में आलू बोए। दोनों ने मिलकर खेत में खूब मेहनत की। दोनों भाई सभी काम मिल–बांटकर करते थे। इसलिए उन्होंने तय किया और रात में रमेश खेत की रखवाली करता व सुरेश दिन में खेत की रखवाली करता था। उनके खेत के पास एक आदमी रहता था, जिसका नाम भीम था। जो दोनों भाईयों की तरक्की को देखकर जलता था। एक रात में जब रमेश खेत की रखवाली कर रहा था तो उसकी थोड़ी देर के लिए उसकी आँख लग गई। भीम तो इसी की तलाश में था। उसने रमेश के खेत में जाकर आग लगा दी। आग लगाकर वह दूर भाग गया, लेकिन उसको भागते हुए रमेश ने देख लिया। रमेश ने तुरन्त आग बुझाई और घर पर जाकर अपने भाई सुरेश को बुलाकर लाया। उसने उसको सारी बात बताई। सुरेश ने कहा जो जैसे करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। कुछ दिनों के बाद भीम की फसल में कीड़े लग गए और कीड़ों ने सारी फसल को नष्ट कर दिया। इस प्रकार भीम को अपने किए की सजा मिल गई।

– किशोर, समूह–रोशनी

होली

होली है भई होली है, प्यार भरी रंगोली है।
आओ मिलकर साथ चले, सबसे जाकर गले मिले।।
लो अपनी टोली निकली, धूम मची है गली–गली।
पीला, हरा, गुलाबी, लाल, चले हाथ में लिए गुलाल।।
सबसे अपनी यारी है, रंग–बिरंगी पिचकारी है।
नाच रहे हैं खड़े–खड़े, झूम रहे हैं बड़े–बड़े।।
यह सबका त्यौहार है, हमको सबसे प्यार है।

– स्वाति, समूह–मेहन्दी

चित्र : स्वाति, समूह–मेहन्दी

होली आई, होली आई

होली आई, होली आई,
अपने साथ रंग है लाई।
संग अपने यह खुशी भी लाई,
किसी के घर अब हो ना लड़ाई।।
सब मिल खा लो खूब मिठाई,
देखो तो यह कितनी रंगीन।
ढोल की धुन पर बजे संगीत,
होली आई, होली आई।। अपने साथ रंग है लाई।

चित्र : दीपिका, समूह–रोशनी

– कौशल्या, समूह–महल

ओम फो... धर्राटी हवा काट रही

ओम फो... धर्राटी हवा काट रही,
म्हारी फिरकणी फर्र–फर्र चाल रही।
सबसे अच्छी सबसे तेज, म्हारी फिरकणी तेजम–तेज।
हवा में ऊपर–नीचे नाच रही, आंगली लगातां ही पट्ट से मार रही।
ओम फो...धर्राटी हवा काट रही, म्हारी फिरकणी फर्र–फर्र चाल रही।

(महल समूह के बच्चों द्वारा मिलकर बनाई गई कविता)

मेरी बात

होली के त्यौहार के बारे में।

मुझे होली का त्यौहार बहुत पसंद है। इस दिन अलग–अलग पकवान भी बनते हैं। मुझे इस त्यौहार की यह बात बुरी लगती हैं कि कुछ लोग होली कीचड़ से खेलते हैं। होली की मुझे यह बात अच्छी भी लगती है कि इस दिन हम लड़ाई नहीं करते हैं। एक–दूसरे के गुलाल और रंग लगाते हैं और किसी बात का बुरा भी नहीं मानते हैं।

– कौशल्या, समूह–महल

होली आई, मस्ती लाई

अपने संग रंगों को लाई,
बच्चे धूम मचाते आए,
रंग–गुलाल उड़ाते आए,
होली आई, होली आई,
अपने संग है मस्ती लाई,
रंग–बिरंगी होली आई,
अच्छा–अच्छा खाना बनाया,
सबने सबको रंग लगाया,
होली आई, होली आई,
अपने संग है मस्ती लाई,

चित्र : किशोर, समूह–रोशनी

(चंदा समूह के बच्चों के द्वारा मिलकर बनाई कविता)

सफेद सांप और सपेरा

चित्र : निशा, समूह महल

एक जंगल में एक सफेद सांप रहता था। वह दूसरे सांपों से बिलकुल अलग था। वह जंगल में दूसरे सांपों के साथ बोर हो गया था। वह शहर जाना चाहता था। एक दिन जंगल में सपेरा सांप पकड़ने आया। सफेद सांप उसके पास जाकर बोला कि क्या तुम मुझे शहर ले जा सकते हो ? सपेरे ने सोचा कि यह अजीब सांप है। खुद ही मेरे साथ जाना चाहता है। सफेरे ने सोचा कि यह अन्य सांपों से अलग एकदम सफेद सुंदर सांप है। शहर में इसका नाच देखने तो बहुत लोग आएंगे। मेरी अच्छी कमाई हो जाएगी। सपेरे ने तुरंत हां भर दी। सपेरे ने भी एक शर्त रखी कि तुम्हें तभी शहर ले जाऊंगा, जब तुम मेरे बीन बजाने पर नाचोगे। सांप ने शर्त मान ली। अब सपेरा सांप को शहर ले आया और वहां बीन बजाकर सांप का नाच दिखाने लगा। सफेद व सुंदर सांप को देखकर लोग पूछते कि इसे कहां से लाए हो, तो सपेरा कहता कि यह इच्छाधारी नाग है। इसे बड़ी मुश्किल से मैंने पकड़ा है। ऐसा झूठ बोलकर और नाच दिखाकर खूब पैसा कमाने लगा। कुछ दिन तो सांप शहर में खुश रहा, लेकिन फिर वह उदास रहने लगा। एक रात सपेरे का दोस्त आया। उसने सपेरे से कहा कि तुम इस सफेद सांप के सिर पर एक मणि चिपका दो और इसको मणि वाला सांप बता कर बेच दो, तुम्हें खूब पैसे मिलेंगे। सांप ने उनकी बातें सुन ली थी। उसे समझ में आ चुका था कि सपेरा तो बहुत लालची है। मुझे धोखा देकर खुद पैसे बना रहा है। सफेद सांप को समझ आ चुका था कि उसके लिए जंगल ही सबसे महफूज जगह है। उसी रात मौका देख कर पिटारे से निकल सांप जंगल में भाग गया और साथियों के साथ रहने लगा।

चित्र व कहानी – निशा, समूह–महल

स्कूल हैं मेरी प्यारी–प्यारी

स्कूल है मेरी प्यारी–प्यारी,
लगती है वो न्यारी–न्यारी,
टीचर हैं वो फूल जैसे,
देते हैं वो ज्ञान ऐसे।
उनकी बातें हैं बहुत निराली,
उनके लिए बजाते हैं ताली,
इस स्कूल की एक अच्छी है बात,
बच्चों का हर वक्त देते है साथ।
स्कूल है मेरी प्यारी–प्यारी,
लगती है वो न्यारी–न्यारी।

– सानिया, समूह–मेहन्दी

चित्र : रेहनुमा, समूह–अमन

बादल

चित्र : आसमा, समूह–मेहन्दी

जब काले–काले बादल आते हैं,
खूब पानी बरसाते हैं,
मोर नाच दिखाते हैं,
मेंढ़क खूब फूदकते हैं,
छाते सब के खुल जाते हैं,
बच्चे खूब नाव तैराते हैं,
सर्दी, गर्मी या बरसात,
हमें सारे मौसम भाते हैं।

– नीतू, समूह–रोशनी

जादुई पन्नी

चित्र : कौशल्या, समूह–महल

एक गांव था। उस गांव में राजू नाम का गरीब लड़का रहता था। राजू सोचा कि क्यों ना खाली बोतलें बेचकर कुछ पैसा कमाया जाए ताकि मुझे खाना मिल जाए। उसने कुछ दिनों तक ऐसा ही किया। लेकिन गांव की सारी बोतलें ही खत्म हो गई तो उसने पन्नियां बेचकर दो वक्त के खाने का इंतजाम करने की सोची। पूरा दिन भटकने के बाद उसको एक ही पन्नी मिली। थक हार कर वह बैठ गया और उस पन्नी को हाथ में लेकर सोचने लगा कि काश मेरे पास बड़ा–सा घर होता। तभी चमत्कार हुआ और उसके बगल घर बन गया। वह समझ गया कि यह जादुई पन्नी है। फिर क्या था उसे जब भी किसी चीज की जरुरत होती पन्नी को हाथ में लेकर मांग लेता। कभी पैसे मांगता तो कभी गाड़ी। एक दिन पन्नी को गुस्सा आ गया और अचानक राजू का घर, पैसा और गाड़ी सभी गायब हो गये। राजू समझ गया कि यह उसके लालच के कारण हुआ है। उसने पन्नी से कहा कि मुझे माफ कर दो, मैंने तुम्हारा गलत इस्तेमाल किया। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। पन्नी को उस पर दया आ गई और वह उसका घर, मकान, पैसा और गाड़ी सब लौटा देती है। लेकिन पन्नी गायब हो जाती है। अब राजू समझ चुका था कि मेहनत करके ही आगे की जिंदगी बितानी होगी। अब वह मेहनत से पैसा कमाने लगा।

– कौशल्या, समूह–महल

खेल

बच्चों ने खेला एक खेल,
जिसमें थे बच्चे अनेक।
कालू, पिन्टू, चीन्टू आया,
उन्होंने मिलकर मजा उड़ाया।
तभी आ गई मम्मी रानी,
पिला रही थी सबको पानी।
बोली थक गए हो तुम सब,
अब पीलो तुम सब पानी।
फिर सुनाउंगी सबको कहानी,
जिसमें होगा राजा और एक रानी।
मम्मी ने फिर किस्से भी सुनाए,
सभी ने सुनकर मजे उड़ाए।

– मुस्कान कंवर, समूह–चांदनी

चित्र : मुस्कान कंवर, समूह–चांदनी

गिल्ली

चन्दा मामा गोल मटोल,
बच्चों के खेल में हो गया झोल।
चिन्टु झगड़ा, पिन्टु झगड़ा,
मिन्टु तो चुपचाप है खड़ा।
चिंकी ने गिल्ली को ऐसे उछाली,
दूर जाकर नाली में मिली।
अब होगा दुबारा खेल भाई,
तभी मम्मी पकौड़ी लाई।
सभी के चेहरे पर खुशी छाई,
सभी ने मिलकर पकौड़ी खाई।

– शुभम कंवर, समूह–चांदनी

चित्र : शुभम कंवर, समूह–चांदनी

सोहन व बकरी का बच्चा

एक लड़का था। उसका नाम सोहन था। वह अपनी बूढ़ी अम्मा के साथ रहता था। सोहन जंगल से लकड़ियां बीन कर लाता और बाजार में बेच कर पैसे कमाता। फिर उससे घर का सामान, आटा, तेल, मिर्च मसाले खरीद कर लाता, तब जाकर उसकी बूढ़ी दादी खाना बनाती और दोनों मिलकर खाना खाते। एक दिन सोहन जंगल में लकड़ियां बीन रहा था। तभी उसकी नजर एक बीमार बकरी के बच्चे पर पड़ी। वह बकरी के बच्चे को अपने साथ घर ले आया। बकरी का इलाज कराने के लिए उनके पास पैसे नहीं थे, तो बूढ़ी अम्मा ने घर पर ही देसी इलाज से बकरी के बच्चे को ठीक कर दिया। बूढ़ी अम्मा और सोहन दोनों मिलकर बकरी के बच्चे का बहुत ध्यान रखते थे। कुछ दिनों में ही बकरी का बच्चा एकदम ठीक हो गया। सोहन अब रोज बकरी के बच्चे को जंगल में ले जाता और उसे जंगल में चराता शाम को लकड़िया बीन कर लाता और बाजार में बेचकर पैसे लेकर आता। समय निकलता गया और बकरी का बच्चा बड़ा हो गया। बकरी के उस बच्चे ने तीन बच्चे और दिए। तीनों बच्चे धीरे–धीरे बड़े हो गए और उन्होंने भी बच्चे दिए। इस तरह करते–करते सोहन और उसकी दादी के पास बहुत सारी बकरियां हो गई थी। उन बकरियों को बेचकर वह पैसा कमाते थे। इस तरह उनका जीवन चल रहा था।

– (चंदा समूह से सुहाना, आरिफ, जहीर, आसिफ, साहिबा के द्वारा बनाई गई कहानी)

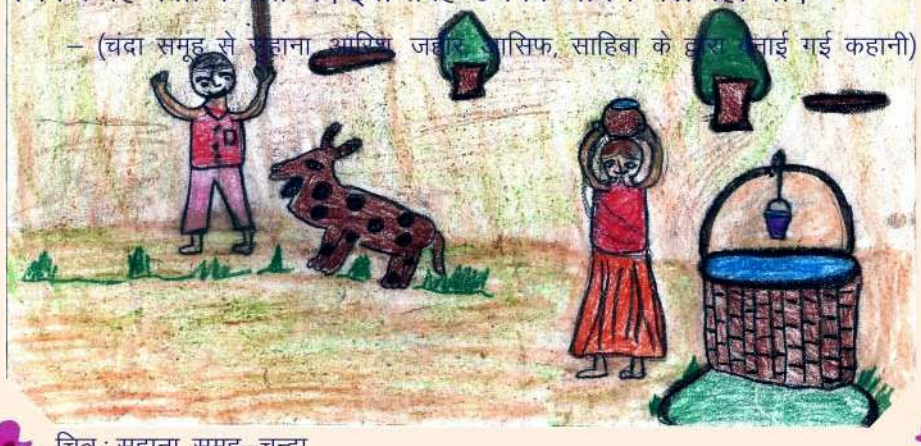

चित्र : सुहाना, समूह–चन्दा

मेरा स्कूल

कितना सुन्दर है स्कूल, इसमें रंग–बिरंगें फूल,
फूल सुहाने सबको भाते, उन्हें देखकर सब ललचाते।

शिक्षिका हमकों पाठ पढ़ाती, नयी–नयी बातें सिखलाती।
पाठ पढ़ाती, बात बताती, बच्चों को कहानियां सुनाती।

सुनो–सुनो बच्चो ये कहानी,
जिसमें होंगे राजा–रानी।
फिर आ गई हमारी नानी,
और हो गई खत्म कहानी।
प्यारे बच्चो स्कूल आओ,
बात सीख की सुनते जाओ।

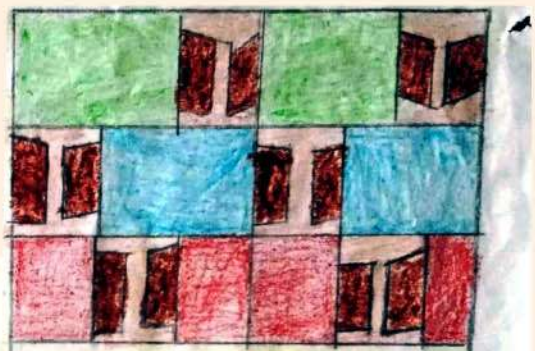

– फिजा शेख, समूह–चांदनी

चित्र : विष्णु, समूह–मेहन्दी

औरत

औरत देश की शान है,
औरत है तो जान है।
औरत देश का मान है,
औरत है तो जहान है।
जिस घर में औरत नहीं है,
वह घर, घर नहीं शमशान है।
औरत देश की शान है,
औरत से ही घर महान है।

– सोफिया, समूह–मेहन्दी

चित्र : सोफिया, समूह–मेहन्दी

नारी

चित्र : साबिरा, समूह–मेहन्दी

दुनिया की पहचान है नारी,
हर घर की जान है नारी।
बेटी, बहिन, मां और पत्नी बनकर,
घर–घर की शान है नारी।
सबका ध्यान रखती नारी,
सबको जन्म देती नारी।
हर जुल्म सहकर भी नहीं घबराती,
बात उसके यह समझ ना आती,
जुल्म अब उसे नहीं है सहना,
ईंट का जवाब पत्थर से है देना

– दिपिका, समूह–मेहन्दी

मददगार लड़का

एक गांव था। उसका नाम रामगढ़ था। उस गांव में एक लड़का रहता था। उसका नाम रवि था, जो बहुत ही गरीब था। एक बार जंगल के रास्ते से वह अपने घर जा रहा था। रास्ते में उसे एक बूढ़ा व्यक्ति मिला। वह व्यक्ति कई दिनों से भूखा था। रवि के पास अपने खाने के लिए रोटी थी, उसने उनमें से दो रोटी उस बूढ़े व्यक्ति को दे दी। रोटी को देखकर वह बहुत खुश हुआ और उसने बदले में रवि को एक डिब्बा दिया। रवि वह डिब्बा लेकर घर आ गया। घर पर डिब्बे को खोल कर देखा तो डिब्बा खाली था। उसने डिब्बे को एक तरफ रख दिया। रवि काम में लगा रहता था। एक दिन अचानक उसे डिब्बे की याद आई। डिब्बे को उतारा और उसको चारों तरफ से देखने लगा। डिब्बे को देखते समय अचानक उसके मुंह से लड्डू खाने की आवाज निकली, इतने में रवि के सामने लड्डूओं से भरा हुआ थाल आ गया, रवि लड्डूओं को देखकर बहुत खुश हुआ। अब जब भी रवि को किसी चीज की जरुरत होती तो वह उस डिब्बे के सामने बोलता और वह काम तुरन्त पूरा हो जाता था। लेकिन रवि ने उस डिब्बे का कभी दुरुपयोग नहीं किया।

– लोकेश, समूह–महक

चित्र : किशोर, समूह–रोशनी

सावन आया सावन आया

चित्र : तराना, समूह–महल

सावन आया सावन आया,
हमको खूब मजा है आया,
मोरों को भी खूब है भाया,
मोरों ने फिर नाच दिखाया,
कोयल ने भी गीत सुनाया,
धरती को मिल खूब सजाया,
सावन आया सावन आया।

– तमन्ना, समूह–महल

चंदू की कहानी

चंदू की नानी,
कहे कहानी,
एक था शरबत,
एक था पानी,
नानी पीए शरबत,
चंदू पीए पानी,
रूठ गया चंदू,
खत्म हुई कहानी।

– कुलसुम, समूह–महल

चित्र : कुलसुम, समूह–महल

पहेलियां

दो अक्षर का मेरा नाम,
तेज धूप में या सर्दी में,
सिर को ढ़कना मेरा काम।

टोपी

ऐसी कौन सी चीज है,
जो चाहे सर्दी हो या गर्मी
हमेशा ठंडी ही रहती है।

बर्फ

वह क्या है जो एक टांग
पर खडी होकर रात में रोती
है और दिन में लेटी सोती है।

मोमबत्ती

दुकानदार

वह कौन है जो दूध
और अंडा दोनों देता है।

पढ़ने में लिखने में दोनों में ही
आता मैं काम, पैन नहीं, कागज
नहीं, बताओ मेरा नाम।

चश्मा

लाल घोड़ा रुका रहे और काला
घोड़ा सरपट भागता जाए, बताओ
क्या है इस जोड़े का नाम।

आग और धुंआं

कुलसुम, समूह–महल

पहेलियां

बारिश के बाद आता है,
सात रंग का होता है,
पल भर में चला जाता है,
सबके मन को भाता है,

इन्द्र धनुष

फुदक–फुदक कर जाता है,
फुदक–फुदक कर आता है,
जानवरों में शर्मिला है,
गाजर, घास खाता है।

खरगोश

ऐसी कौनसी चीज है जो
चलते–चलते थक जाये तो उसकी
गर्दन काटने पर फिर से
चलने लगती है।

पेंसिल

मालिक का मैं वफादार हूं,
करता हूं रखवाली,
चमक नींद में मैं सोता हूं,
बैठा नही मैं खाली।

कुत्ता

चंद्राशु, सलोनी,
अमित और काजल; समूह–आंगन

चित्र : कुलसुम; समूह–महल

बासेड़ा

बासेड़ा त्यौहार के एक दिन पहले हम अलग–अलग तरह के पकवान बनाकर रख देते हैं जैसे–पूए, पापड़ी, मीठे चांवल, पकोडियां, खाटा, आटे का हलवा, राबड़ी। इसे अगले दिन यानि बासेड़ा के दिन खाते हैं। इसे हम अगले दिन इसलिए खाते हैं, क्योंकि बासेड़े का यही तो मतलब होता है कि इस दिन बासा खाना ही खाते हैं।

बासेड़ा आया, बासेड़ा आया,
देखो तो अपने संग बासी चीजें भी लाया,
बासेड़ा आया, बासेड़ा आया,
देखो तो अपने संग बासे पकवान है लाया,
बासेड़ा आया, बासेड़ा आया।

– कौशल्या, समूह–महल

ऐसा कौनसा त्यौहार है जिस दिन हम केवल बासी चीजें ही खाते हैं?

बासेड़ा

चित्र : समरीना समूह महल

चुटकुला

दीपा चाय बना रही थी। तभी उसके पापा उससे बोले, "बेटा आज ऐसी चाय बना, जिससे मेरी थकान दूर हो जाए। मेरा तन–बदन झूमने लगे और मैं नाचने लगूं।"
दीपा बोली, "पापा अपने भैंस का दूध आता है, नागिन का नहीं।"

– निशा, समूह–महल

बसंत पंचमी

चारों ओर बसंत है छाया,
संग अपने बसंत पंचमी का त्यौहार लाया।
माँ सरस्वती का जन्मदिन है आया,
घर–घर में हरियाली लाया।
बसन्त पंचमी के पावन अवसर पर,
सबका मन है हरसाया।
माँ सरस्वती की पूजा कर,
उनसे आशीर्वाद है पाया।
घर को साफ सुथरा है बनाया,
फूल मालाओं से खूब सजाया।
ऐसे हम सबने मिलकर,
बसंत पंचमी का त्यौहार मनाया।

– दिलशाद, समूह–अमन

चित्र : सादिया, समूह–महल

जब पापा फिसल गए

मैं एक दिन मस्जिद जा रही थी तो मैंने सोचा कि सानिया को भी मस्जिद ले चलूं। मैं सानिया के घर जा रही थी तो मैंने देखा कि एक कुत्ता मेरे सामने से आ रहा है। मैंने सोचा कि यह तो मेरा कुछ भी नहीं करेगा। फिर मैं छाती तान के जाने लगी तो अचानक वह कुत्ता मेरे पीछे लग गया, यह देख मैं इतनी जोर से भागी कि गिर ही गई। मैंने चिल्लाकर पापा को बुलाया। पापा ने मेरी आवाज सुनकर लकड़ी उठाई और मुझे आवाजें देते हुए, मुझे बुलाते हुए मेरी ओर आए। उन्हें आता देखकर वह कुत्ता मेरे पापा के पीछे दौड़ा। मेरे पापा घबराकर फिसल गए। यह देख कुत्ता भी घबरा कर भाग गया और हम सभी जोर से हंसने लगे। हा हा हा हा। लेकिन शुक्र था कि हमें कोई चोट नहीं आई।

– सादिया, समूह–महल

चित्र : कौशल्या और सादिया; समूह–महल

हमारे बकरे को शेर खा गया

एक रात की बात है जब हम सब सो रहे थे। अचानक रात में टीन बजने की आवाजें आने लगी तो मेरे पापा की नींद खुल गई। उन्होंने देखा कि बाहर जोर से हवाएं चल रही हैं। उन्होंने सोचा कि हवा के कारण टीन बज रही होंगी। ऐसा सोचकर वह सो गए। सुबह जब पापा नहाकर पीछे बकरियों को संभालने गए तो उन्होंने देखा कि एक बकरा मरा पड़ा है। उन्होंने सभी को आवाज देकर बुलाया। हम सभी ने देखा कि वहां बकरा मरा पड़ा था। उसे शेर खा गया था। उसका आधा मांस ही वहां पड़ा था। तभी चाची ने पापा को कहा कि पुलिस को फोन करो। पापा ने पुलिस को फोन किया तो हमारे यहां पुलिस आई। उन्होंने पापा से बात की और मरे बकरे की फोटो खींची। शेर के पंजों के निशान की भी फोटो खींची। फिर पुलिस वहां से चली गई। हमारे बकरे के मरने का हमें बहुत दुख हुआ।

— कुलसुम, समूह–महल

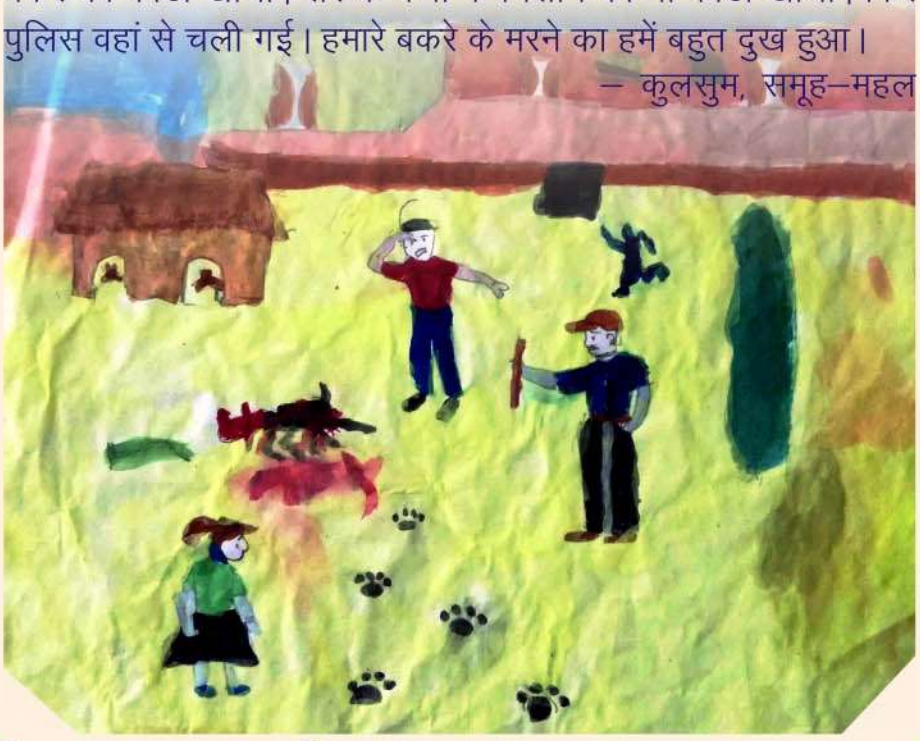

चित्र : तराना, तमन्ना; समूह–महल